

दावते अमल

मुसन्निफ
हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुल हामिद कादरी बदायूनी

इस किताब में कुरआने हकीम के इरशादात के मुताबिक मुसलमानों की ज़िन्दगी का दस्तूरुल अमल दर्ज किया गया है

(इस किताब को हम ने तुम पर इस लिए उतारा कि तुम इन्सानों को अंधेरे से रौशनी की तरफ़ ले जाओ. *अल-क़ुरआन*)

दावते अमल

इस किताब में क़ुरआने हकीम के इरशादात के मुताबिक़ मुसलमानों की ज़िन्दगी का दस्तूरुल अमल दर्ज किया गया है.

मुसन्निफ़

हज़रत मौलाना शाह **मुहम्मद अब्दुल हामिद**
क़ादरी बदायूनी

विषय सूची

नवाही

मईशत (नैतिकता) की शिक्षा

हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुल हामिद क़ादरी बदायूनी

प्रोफ़ेसर डा0 जलाल उद्दीन अहमद नूरी
(साबिक़ चेयरमैन शोबाए उलूम इस्लामिया, कराची यूनिवर्सिटी)

तहरीक पाकिस्तान के मुमताज़ रहनुमा हज़रत मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुल हामिद क़ादरी बदायूनी इब्ने मौलाना हकीम अब्दुल क़य्यूम शहीद (रजब 1318 हि.) इब्ने मौलाना हाफ़िज़ मुरीद जीलानी इब्ने मौलाना मुही उद्दीन इब्ने सैफुल्लाह मसलूल मौलाना शाह फ़ज़्ले रसूल बदायूनी[1] कुद्दस सिर्रहु 1318 हि./1900 ई. में देहली में अपने ननिहाल में पैदा हुए। मुहम्मद ज़ुलफ़िक़ार हक़ (1318 हि.) तारीख़ी नाम तजवीज़ हुआ।[2] अभी आपकी उम्र बीस दिन की थी कि वालिद साहब का इन्तिक़ाल हो गया।

आपका ख़ानदना शरीअ़तो तरीक़त के एतबार से न सिर्फ़ बदायूँ बल्कि पूरे हिन्दुस्तान में मरकज़ी हैसियत रखता था, मसलक एहले सुन्नत व जमाअ़त की तरवीजो इशाअ़त और फ़र्क़े बातिला की तरदीद में इस ख़ानदान की मसाई जमीला नाक़ाबिले फ़रामोश हैं।

मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी और उनके बड़े भाई मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी की तालीमो तरबियत का तमाम इन्तिज़ाम उनकी वालिदा साहिबा (सय्यद बहा उद्दीन देहल्वी की हमशीरा) ने किया। इब्तिदा में अपने आबाई मदर्सा ''मदरसा क़ादरिया'' में तालीम हासिल की, आख़री दो साल इलाहियात की तकमील और फ़ने क़िरअ़त की तहसील के लिए मदरसा इलाहिया कानपुर में रहे। आपके असातज़ा में आपके मुरशिद बरहक़ (1) मौलाना शाह अब्दुल मुक़्तदिर बदायूनी कुद्दस सिर्रहु, (2) हज़रत मौलाना मुहिब्ब अहमद क़ादरी, (3) मौलाना हाफ़िज़ बख़्श बदायूनी, (4) मौलाना क़दीर बख़्श बदायूनी, (5)

---

1. मुहम्मद अय्यूब क़ादरी, प्रोफ़ेसर मदरसा शम्सुल उलूम बदायूं, मुजल्ला इल्मो-आगही, कराची ख़ुसूसी शुमारा 1974 ई., स0: 94 ।
2. मुहम्मद अहमद क़ादरी - 'तज़किरा उल्माए एहले सुन्नत', स0: 159 ।

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद इब्राहीम बदायूनी, (6) मौलाना मुश्ताक़ कानपुरी, (7) मौलाना वाहिद हुसैन, (8) मौलाना अब्दुस्सलाम फ़ल्सफ़ी और (9) मौलाना मुफ़्ती अब्दुल क़दीर बदायूनी के नाम मिलते हैं।

तकमील के बाद मदरसा शम्सुल उलूम बदायूँ के नाइब मोहतमिम मुक़र्रर हुए और तीन साल तक मदरसे के इन्तिज़ामो इन्सिराम और तरक़्क़ी में कोशाँ रहे। उसी ज़माने में तहरीके ख़िलाफ़त शुरू हुई तो मौलाना अब्दुल बारी फ़िरंगी महली लखनवी ने मौलाना मुहम्मद अली जौहर और मौलाना शौकत अली को हज़रत मौलाना शाह अब्दुल मुक़्तदिर बदायूनी की ख़िदमत में बदायूँ भेजा, उन्होंने मेहमानों की ख़ूब ख़ातिर मदारात की और अपने ख़ानदान के तमाम अफ़राद को अमूमन और मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी और मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी को खुसूसन हुक्म दिया कि अंग्रेज़ी इस्तेमार के ख़ातमे के लिए अली बिरादरान उनके रुफ़क़ा का साथ दें, पीरो मुर्शिद के हुक्म के मुताबिक़ मौलाना अब्दुल माजिद बदायूनी और मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी ने हिन्दुस्तान के गोशा गोशा में जा कर तहरीके ख़िलाफ़त का पैग़ाम पहुंचाया, मौलना अब्दुल हामिद बदायूनी डिस्ट्रिक्ट ख़िलाफ़त कमेटी बदायूँ के जनरल सेक्रेट्री रहे, ख़िलाफ़त प्राविन्शल कमेटी और सैन्ट्रल ख़िलाफ़त कमेटी बम्बई की मजलिस आमिला के रुकुन रहे।

गांधी ने तहरीके ख़िलाफ़त में शरीक हो कर क़ाइदाना पोज़ीशन हासिल कर ली थी, मुसलमान अपनी सादा लौही की बिना पर हिन्दुओं को अपना हमदर्द तसव्वुर कर बैठे थे, लेकिन शुद्धी तहरीक शरू होने पर मुन्कशिफ़ हुआ कि हिन्दुओं के ज़हन में ख़िलाफ़त के परदे में मुसलमानों के ख़िलाफ़ क्या क्या मन्सूबे परवरिश पा रहे हैं। मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी शुद्धी तहरीक के शरू होते ही कांग्रेस से अलग हो गए और मरकज़ी तबलीगे़ इस्लाम अंबाला और आगरा में शरीक हो कर हर उस जगह पहुंचे जहाँ शुद्धी तहरीक काम कर रही थी।[3]

हिन्दुओं की तंग नज़री और इस्लाम दुश्मनी के पेशे नज़र ज़रूरत महसूस की गई कि मुसलमानों की अलग जमाअ्त क़ायम होनी चाहिए। चुनांचे जब मुस्लिम लीग कान्फ्रेंस क़ायम की गई तो मौलाना अब्दुल

---

३. मुहम्मद फ़ारूक़ अहमद, सय्यद गुलदस्ताए अक़ीदत, सु0: 43 ।

हामिद बदायूनी और तहरीके ख़िलाफ़त के अक्सर क़ाइदीन मुस्लिम लीग कान्फ्रेंस में शरीक हो गए। लन्दन कान्फ्रेंस के बाद देहली में मौलाना शौकत अली की क़यामगाह पर मुस्लिम रहनुमाओं का इजलास हुआ तो मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी ने भी उस में शिरकत की, इस इजलास में तय हुआ कि आइन्दा इन्तिख़ाबात में सिर्फ़ मुस्लिम लीग मुसलमानों की नुमाइन्दगी करे। मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी ने यू.पी., सी.पी., बिहार, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बम्बई, कराची, अन्दरून सिन्ध, बलूचिस्तान और पंजाब के दूर दराज़ इलाक़ों में जा कर सब मुसलमानों को मुस्लिम लीग के हक़ में वोट देने के लिए तैयार किया, पीर साहब मानकी शरीफ़ के भरोसे पर क़ाइदे आज़म ने आपको सरहद भेजा, जहाँ आप ने ख़ान बिरादरान के असरात को ख़त्म कर के मुस्लिम लीग की मक़बूलियत को चार चान्द लगा दिए। इन्ही ख़िदमात की बिना पर क़ाइदे आज़म की जानिब से आपको ,फ़ातिह सरहद का लक़ब दिया गया। सिलहट और बंगाल में मौलाना बदायूनी की जोश से भरी तक़रीरों ने कांग्रेसी तिलिस्म को तोड़ कर मुस्लिम लीग के नुमाइन्दे को कामयाब कराया। मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी और उनके रुफ़क़ा उल्माए किराम ने मुस्लिम लीग के नुमाइन्दों को सिलहट में कामयाब करा दिया।

हाफ़िज़ बशीर अहमद ग़ाज़ियाबादी लिखते हैं:-

> ''आज के बहुत से (कांग्रेसी) उल्मा जो पाकिस्तान में नज़रियाए पाकिस्तान की हिफ़ाज़त कर रहे हैं और मुख़्तलिफ़ सियासी प्लेटफ़ार्मों से अपनी हुब्बुल वतनी का ढिंढोरा पीट रहे हैं। आल इण्डिया नैश्नल कांग्रेस के हमनवा थे और आल इण्डिया मुस्लिम लीग और क़ाइदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह के मुक़ाबले में हरीफ़ाना सियासी चालें चल रहे थे, ख़ुदा मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी को करवट करवट जन्नत नसीब करे, उन्होंने इस मुहाज़ पर नैश्नलिस्ट उल्मा का मुक़ाबला किया और मुस्लिम लीग में अपनी बेहतरी सलाहियतें सर्फ़ कीं।''[4]

4- मुहम्मद फ़ारूक़ अहमद, सय्यद गुलदस्ताए अक़ीदत, सु0: 43 ।

23 मार्च 1940 ई. को मिन्टो पार्क लाहौर के तारीख़ी इजलास में क़रारदाद पाकिस्तान पेश की गई तो मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी मुस्लिम लीग के उन उल्मा में शामिल थे जिन्होंने क़रारदाद की ताईद में तक़रीर की थी। 30 अगस्त 1941 को लुधियाना में आपकी सदारत में पाकिस्तान कान्फ्रेंस मुन्अक़िद हुई, इस कान्फ्रेंस में आपने पाकिस्तान के हक़ में बलीग़ खुतबा इरशाद फ़रमाया जो बाद में निज़ामी प्रेस बदायूँ से छप कर मुल्क भर में तक़्सीम हुआ। 1945 ई. में क़ाइदे आज़म मुहम्मद अली जिनाह और मीर उसमान अली ख़ाँ फ़रमाँरवाए हैदराबाद दकन के बाहमी इख़्तिलाफ़ात नाज़ुक सूरत इख़्तियार कर गए तो क़ाइदे मिल्लत ख़ान लियाक़त अली ख़ान ने मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी को मुन्तख़िब किया ताकि इख़्तिलाफ़ात ख़त्म कराने के लिए दोनों रहनुमाओं की मुलाक़ात का रास्ता हमवार करें। वालिये दकन, मौलाना बदायूनी की बड़ी क़द्रो मन्ज़िलत करते थे और उन्हें जलसों में तक़ारीर के लिए बुलाया किया करते थे। मौलाना ने फ़रमाँ रवाए दकन से मुलाक़ात की और तवील गुफ़्तुगू के बाद उन्हें क़ाइदे आज़म से मुलाक़ात करने पर आमादा किया।[5]

1946 ई. में आल इण्डिया सुन्नी कान्फ्रेंस, बनारस में न सिर्फ़ शरीक हुए बल्कि कामयाब बनाने में नुमायाँ ख़िदमात अन्जाम दीं। 1946 ई. में उल्मा का एक वफ़द हिजाज़े मुक़द्दस गया जिसके क़ाइदे मुबल्लिग़े इसलाम मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुल अलीम सिद्दीक़ी मेरठी और जनरल सेक्रेट्री मौलाना बदायूनी थे। इस वफ़द ने न सिर्फ़ हुज्जाज पर आइद करदा टैक्स ख़त्म करने के सिलसिले में हुकूमत सऊदिया से मुज़ाकरात किए बल्कि आलमे इस्लाम के दीनी और सियासी रहनुमाओं के सामने नज़रिया-ए-पाकिस्तान को मुअस्सिर तौर पर पेश कर के पाकिस्तान की हिमायत पर आमादा किया।

क़याम पाकिस्तान के बाद आप आल इण्डिया मुस्लिम लीग के इजलास में शिरकत के लिए कराची तशरीफ़ लाए तो उल्माए पाकिस्तान के इसरार पर मुस्तक़िल तौर पर यहीं क़याम पज़ीर हो गए।[6]

---

5. अमीर अली इमाम, सय्यद मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र
6. अमीर अली इमाम, सय्यद मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र

जब आपने देखा कि हिन्दुस्तान से हिजरत कर के आने वाले मुसलमान कसमुपर्सी में मुब्तिला हैं तो आपने एक इजलास में हिन्दुस्तान के तमाम सूबों और मुक़ामी नुमाइन्दों पर मुश्तमिल "मरकज़ी मुहाजिरीन कमेटी" की बुनियाद डाली जो अवामी और सरकारी सतह पर मुहाजिरीन की आबादकारी और उनकी ज़रूरियात की फ़राहमी के लिए मुसलसल कोशिश करती रही।

1947 ई. में आपकी तहरीक पर कराची में मीलादुन्नबी का अज़ीम और शानदार जुलूस निकाला गया जिस में उस वक़्त के वज़ीरे आला सिन्ध मुहम्मद अय्यूब खोड़ू भी पा प्यादा शरीक हुए। इसके अलावा खुल्फ़ाए राशिदीन और इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अय्याम शानो शौकत से मनाने का एहतिमाम भी आप ही ने शरू किया, इन इज्तिमाआत में पाकिस्तान के गवर्नर जनरल और वज़ीरे आज़म ने भी शिरकत की।

1948 ई. में मौलाना शाह अब्दुल अलीम मेरठी की क़यादत में सिन्ध के उल्माओ मशाइख़ के एक वफ़द ने क़ाइदे आज़म से मुलाक़ात की जिसमें मौलाना बदायूनी भी शरीक थे और तफ़्सीली याददाश्त पेश करते हुए मुताल्बा किया कि "मुल्क पाकिस्तान का दस्तूर किताबो सुन्नत की रौशनी में तैयार किया जाए और दीगर इस्लामी मुमालिक की तरह पाकिस्तान में भी वज़ारते उमूर मज़हबिया क़ायम की जाए"।[7]

जमीयतुल उल्मा पाकिस्तान के क़याम और इस्तहकाम के लिए इब्तिदा ही से आपने अपनी कोशिशें वक़्फ़ कर रखी थीं, हज़रत अल्लामा अबुल हसनात क़ादरी के विसाल के बाद जमीयत के मरकज़ी सदर बने और अपनी रात दिन की मेहनत से जमीयत को चार चान्द लगा दिए। मौलाना उन उल्माए में शामिल थे जिन्होंने 22 नुकात पर मुश्तमिल दस्तूरी ख़ाका मुरत्तब किया था, 1953 ई. में जब तहरीक ख़त्मे नबुव्वत शुरू हुई तो उस में आपने खुल कर हिस्सा लिया और इन्तहाई अलालत के बावजूद फ़रवरी 1952 ई. से जनवरी 1954 ई. तक कराची और सक्खर की जेलों में क़ैदो बन्द की सऊबतें बर्दाश्त करते रहे।

---

7. अमीर अली इमाम, सय्यद मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र

1962 ई. में इस्लामी मुशावरती कौन्सिल के रुकुन नामज़द हुए, इस ज़िम्न में उन्होंने कौन्सिल को अहिम सिफ़ारिशात पेश कीं। 1965 ई. में पाक भारत जंग छिड़ी तो आप ने उल्मा एहले सुन्नत की एक जमाअ्त के साथ मुल्क भर का दौरा किया और तीन लाख रुपये के कपड़े और दीगर साज़ो सामान मुहाजिरीन कश्मीर में तक़सीम किया।

मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी ने क़दीम और जदीद उलूम के साथ साथ दुनिया की अहिम ज़बानों की तालीम के लिए कई लाख रुपये सर्फ़ कर के मंघू पीर रोड कराची में जामिया तालीमाते इस्लामिया के नाम से अज़ीम दर्सगाह क़ाइम की, आपकी अपील पर सदर मुमलिकत फ़ील्ड मार्शल अय्यूब ख़ान और इस्लामी मुमालिक के सरबराहों ने दिल खोल कर इमदाद की थी अफ़सोस कि तहरीक पाकिस्तान के इस अज़ीम मुजाहिद की क़ाइमकर्दा दर्सगाह पर बज़ोर सुपर मार्केट बना दी गई और आधे हिस्से पर हुकूमत सिन्ध ने गवर्नमेंट डिग्री कालिज के नाम से कालिज बना कर क़ब्ज़ा कर लिया है। पाकिस्तान के साथ एक ही मुजाहिद की ख़िदमात को मलियामेट करने पर सब्र कर लिया जाता लेकिन यहाँ तो मोहसिनीन को ज़लील करने का तरीक़ा ईजाद कर लिया गया है। आइन्दा अब कौन वतन के नाम पर जान देने के लिए तैयार होगा?

आप चीन, रूस, मिस्र, तुर्की, अल्जीरिया, त्यूनिस, नाइजीरिया, कोएत, इराक़, ईरान, हिजाज़ मुक़द्दस गए[8] और मसला-ए-कश्मीर की अहमियत को वाज़ेह कर किया। आप ने बाईस मर्तबा हरमैन शरीफ़ैन की हाज़िरी की सआदत हासिल की।[9] आपके शाह फ़ैसल (बादशाह इराक़), सदर नासिर (मिस्र), डाक्टर मुहम्मद हई (इण्डोनेशिया), अब्दुस्सलाम आरिफ़ (सदर इराक़), मुफ़्ती आज़म फ़लस्तीन सय्यद अमीन अल हुसैनी और मुसलमानाने रूस के मुफ़्ती आज़म से ज़ाती मरासिम थे और इन हज़रात ने आपकी वफ़ात पर ताज़ियती पैग़ामात में आप की दीनी और इल्मी ख़िदमात को ख़िराजे तहसीन पेश किया।[10]

---

8. अमीर अली इमाम, सय्यद   मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र
9. बशीर अहमद ग़ाज़ियाबादी, गुलदस्तए अक़ीदत, सु0: 35 ।
10. अमीर अली इमाम, सय्यद   मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र

आपने बे अन्दाज़ा मुल्की व मिल्ली मशाग़िल के बावजूद क़ाबिले क़द्र तसानीफ़ का ज़ख़ीरा यादगार छोड़ा, चन्द तसानीफ़ के नाम यह हैं: 1. फ़ल्सफ़ा इबादाते इस्लामी, 2. मश्रिक़ का माज़ी व हाल, 3. तसहीहुल अक़ाइद, 4. इन्तख़ाबात के ज़रूरी पहलू, 5. निज़ामे अमल, 6. अल-जवाब अल मशकूर (अर्बी), 7. किताबो सुन्नत ग़ैरों की नज़र में, 8. इस्लामिक प्रियर्ज़ (अंग्रेज़ी), 9. इस्लाम का ज़िराअ्ती निज़ाम, 10. हुरमते सूद, 11. मुरक्क़ा कांग्रेस (मतबूआ 1938 ई.), 12. मुशीरुल हुज्जाज।[11]

बिहम्दिही तआला कराची में मौलाना बदायूनी एकेड्मी क़ाइम हो चुकी है लेकिन उसकी कारकर्दगी का मुज़ाहिरा अब तक सामने नहीं आ सका। उम्मीद है कि आइन्दा इस एकेड्मी से आपकी तसानीफ़ को दोबारा शाए करने को अव्वलियत दी जाएगी।

15 जमादियुल ऊला 1390 हि./20 जुलाई 1970 ई. को तहरीके पाकिस्तान के सफ़े अव्वल के मुजाहिद, आलिम बा अमल मौलाना शाह मुहम्मद अब्दुल हामिद बदायूनी क़ादरी ने जिनाह अस्पताल कराची में विसाल हुआ। आपकी आख़री आरामगाह जामिया तालीमात इस्लामिया मंघू पीर रोड कराची के अहाते में बनी। पसमान्दगान में एहिल्या मोहतरमा, दो साहिबज़ादे जनाब मुहम्मद आबिदुल क़ादरी और जनाब मुहम्मद ज़ाहिदुल क़ादरी और एक साहबज़ादी यादगार में छोड़ीं।[12]

सय्यद कमाल उद्दीन अब्दुल क़ादिर गीलानी सफ़ीर इराक़ ने यह पैग़ामे ताज़ियत भेजा:

> "मौलाना बदायूनी के अचानक इन्तक़ाल की ख़बर मुझे अभी मालूम हुई है। मौलाना बदायूनी अलैहिर्रहमा जय्यद आलिमो फ़ाज़िल थे और मुसलमान क़ौम में उनका बहुत बड़ा मुक़ाम था, ख़ुदा तआला मौलाना की रूह पुर फ़ुतूह पर अपने फ़ज़्लो करम की बारिश करे"।

हज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान अलैहिर्रहमा इब्ने हज़रत मौलाना शाह ज़िया उद्दीन अल मदनी ने बर्क़ी पैग़ाम भेजा:

---

11. अमीर अली इमाम, सय्यद   मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र
12. अमीर अली इमाम, सय्यद   मौलाना अब्दुल हामिद बदायूनी पर एक नज़र

"अफ़सोस कि पाकिस्तान और पाकिस्तानी क़ौम एक मुक़्तदिर मज़हबी पेशवा और जय्यद आलिम और फ़ाज़िल से महरूम हो गई। बारी तआला मौलाना अलैहिर्रहमा के ख़ानदान को इस ग़ैर मामूली सद्मे को बर्दाश्त करने की हिम्मत दे और मरहूम पर अपने फ़ज़लो करम की बाशि फ़रमाए, आमीन"।

मौलाना जमाल मियाँ फ़िरंगी महली इब्ने हज़रत मौलाना अब्दुल बारी फ़िरंगी महली ने इन अल्फ़ाज़ में ताज़ियत का पैग़ाम भेजा:

मौलाना अब्दुल हामिद क़ादरी बदायूनी के इन्तिक़ाल की ख़बर से मैं ग़ैर मामूल तौर पर क़ल्बी सद्मा महसूस करता हूँ। यह हाद्सा न सिर्फ़ मेरे लिए बल्कि पूरी मिल्लते पाकिस्तान के लिए एक ना क़ाबिले तलाफ़ी नुक़सान है।"13

जनाब सय्यद सैफ़ी नद्वी ने क़ता तारीख़ कहा:-

अब्दे हामिद सरापाए जिहदो यक़ीं
आलिमे दीनो सरमाया-ए-एहले दीं
सरफ़राज़े कि मिल्लत अज़ो सर बुलन्द
दाश्त बर आस्ताने मुहम्मद जबीं
ख़ुश बरफ़्त अज़ जहाँ सूए दारुल बक़ा
शुद जहाँ अज़ जुदाई ज़ातिश ग़मीं
हातिफ़म गुफ़्त सैफ़ी ज़ साले विसाल
"मुंबर अब्दे हामिद बहिश्ते बरीं"14
1390 हि.

जनाब साबिर बरारी क़ादरी ने ईसवी सन क़लम बन्द किया:-

साले रहलत को है 'साबिर' गुंबद की सदा
"आलिमे मशहूर, हामिद, आज़िम बाग़े जिनाँ"15
1970 ई.

☆☆☆

13. गुलदस्तए अक़ीदत, सु0 11, 12 ।
14. गुलदस्तए अक़ीदत, सु0 33 ।
15. गुलदस्तए अक़ीदत, सु0 2 ।

एहवाल वाक़ई

मुसलमान मुद्दत-मदीदा[1] से अपनी हयात को उस्तवार[2] और मज़बूत बनाने के लिए तदाबीर[3] सोच रहे हैं। इस्लामी हिन्द का शायद ही कोई इदारा[4] ऐसा हो जिस में हर साल इस मसले पर ग़ौरो फ़िक्र का ऐलान न किया जाता हो, मगर अफ़सोस! हम सदहा-मजालिस[5] के बाद भी आज तक यह तय न कर सके कि मुस्लिम की ज़िन्दगी का लाहया-ए-अम्ल[6] क्या है?

हमने दूसरों के तजवीज़कर्दा[7] मुआलिजात[8] तो पसन्द किए लेकिन दीनो-दुनिया के सब से बड़े रूहानी मुअल्लिम शहिंशाहे कौनैन हज़रत ख़त्म रिसालत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुदरत के इरशाद से जो नुसख़ा हमारे लिए तजवीज़[9] फ़रमाया उसकी तरफ़ से सब की नज़रें ओझल हो गईं। जो सहीफ़ा-ए-कुदरत[10] हमारे हाथों में छोड़ा गया था उस में न सिर्फ़ यह कि मुस्लिम की ज़िन्दगी का लाइहया अम्ल मौजूद था बल्कि कुदरत ने अपने इस आख़री मजमूए तमाम में तमाम जहाँ के लिए सरमाया-ए-हयात[11] जमा फ़रमा दिया। अगर हमारे अन्दर कुरान करीम की हक़ीक़ी रूह मौजूद होती तो सदियों का रास्ता तय हो कर अब से बहुत क़ब्ल मन्ज़िले-मक़सूद[12] हासिल हो गई होती। कुरान मजीद ने ज़िन्दगी के वह तमाम मनाज़िल[13] जिन से इन्सान को साबिक़ा पड़ता है दुनिया के सामने ज़ाहिर कर दिये और उन तमाम मुबाहिसो-मतालिब[14] को समझाने के लिए एक हस्ती हमारी मुअल्लिम[15] बनाई गई जिसकी हयात-तैय्यबा[16] का एक-एक वरक़ कुरान पाक की अम्ली-तफ़्सीर और जिसकी ज़ात वाला सिफ़ात में दीनो दुनिया का हर पहलू अपने इन्तहाई कमाल के साथ मौजूद है

सल्लल्लाहु अलैका या रसूलल्लाह

ज़ाहिरी तौर पर हम कुरान की तिलावत भी करते हैं मगर कभी इस पर ग़ौर किया वह हमें किस तरफ़ बुला रहा है?

बिला शुबा आज दुनिया की माद्दी हुकूमतों के क़वानीन[17] में आए दिन तग़य्युरात[18] होते रहते हैं बल्कि ज़ाती इग़राज़ रखने वालों ने तो सुहफ़े इलाहिया[19] में भी अपनी आरा-ओ-इनकार[20] को शामिल कर के तब्दील कर दिया, अगरचे कुरान हकीम पर भी बातिल-परस्तों[21] के गर्म व सर्द झोंके पैहम आए मगर यह सहीफ़ा-ए-कुदरत महफ़ूज़ो-मामून[22] रहा और हमेशा कुदरत की तरफ़ से उसकी पूरी तरह सयानत[23] होती रहेगी क्योंकि **"इन्ना लहू लहाफ़िज़ून"** का मुस्तहकम[24] वादा मौजूद है, इसी सिलसिले में यह अम्र भी क़ाबिले लिहाज़ है कि क़ानून वही क़ानून कहलाने का मुस्तहिक़ हो सकता है और वही किताब दुनिया में मुस्तहकम रह सकती है जिसमें हर मिल्लत के लिए आलमगीर-तालीमात[25] मौजूद हों और वह खुद भी खुदा की तरफ़ से नाज़िल होने का दावा कर रही हो।

कुरान करीम का बग़ौर मुताला[26] करने वाला जानता है कि इसकी हिदायात[27] से बिला इम्तियाज़ क़ौमो मिल्लत हर शख़्स पूरी तरह फ़ायदा उठा सकता है, कुरान करीम का दरवाज़ा हर जमाअ़त के लिए खुला हुआ है और आलम[28] की इस्लाहो-ज़रूरत[29] के लिए कुरानी औराक़ में तमाम उसूल मौजूद हैं जिनके तहत इन्सानियत की तकमील बा आसानी हो जाती है और कुरान करीम के बाद किसी दूसरे इजमाली[30] क़ानून की जिनका दायरा अम्ल महदूदो-मुतय्यन[31] हो, ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती, जितना जितना कुरान करीम में हम डूबते हैं कुरान करीम की आलमगीर दावते इस्लाहो अम्ल का दावा सही साबित होता जाता है बल्कि पूरे यक़ीन से कहा जा सकता है कि आज दुनिया में जो भी कोई उम्दा उसूल पेश किया जाएगा वह कुरान करीम की पेशकर्दा तालीम का नतीजा होगा।

जब तक मुसलमानों ने कुदरत के इस क़ानून की दफ़आत पर अम्ल किया वह दुनिया की हर मिल्लत में सब से ज़्यादा मुमताज़ है।

एक वह वक़्त भी था कि मुसलमानों के पास दुनिया की दौलतो हशमत न थी माद्दी ज़ेवरों से भी वह पूरी तरह आरास्ता न थे, जंग के मैदानों में

तलवारों के बजाए खुरमे की लकड़ियों, ऊंटों की हड्डियों से काम ले कर क़ैसरो किसरा के तख़्तो ताज के मालिको वारिस बने।

जो क़ौमें कभी मुसलमानों की ज़ाहिरी सक़ीम[32] हालत की वजह से मज़ाक़ उड़ाती थीं वही कुरानी अख़लाक़ो सीरते मुहम्मदिया पर चलने वाले मुसलमानों का मज़बूत अम्ल देख कर उनकी ग़ुलाम हो जाती थीं। मुसलमानों ने कुरान को सीने से लगा कर मज़हबी जज़्बातो-हिस्सियात[33] के साथ बहरो-बर[34] को मुसख़्ख़र[35] कर लिया और इस वाहिमा[36] का क़िला-कुमा[37] कर दिया कि "मज़हब तरक़्क़ी की राह में मानेअ्[38] है"।

मुझे यहाँ तहज़ीब जदीद की बरकात या दहरियतो इलहाद पर नक़दो तब्सिरा करना मक़सूद नहीं इसके लिए दूसरे मवाक़े काफ़ी हैं बल्कि सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना है कि मुसलमान कुरान करीम के बताए हुए क़वानीन पर अम्ल कर के आज भी दुनिया की हर क़ौम से आगे हो सकते हैं।

आख़िर वह निज़ामे-अम्ल[39] क्या है? मैंने अपने इस पन्द्रह साला हक़ीर क़ौमी व मज़हबी इश्तिग़ाल[40] के ज़माने में बारहा देखा और सुना कि हमारे क़ाइदीन[41] कोई प्रोग्राम पेश नहीं करते।

अगरचे अपनी अपनी जगह मुसलमानों की ज़रूरियात के मुताबिक़ कुछ न कुछ ज़ाहिर किया गया मगर लाइहया अम्ल का सवाल हर तरफ़ उठता ही रहता है इसका बज़ाहिर हाल सिर्फ़ यही सबब[42] मालूम होता है कि हमारे दिमाग़ कुरानी प्रोग्राम से ख़ाली हो गए हैं या उसका वज़न हमने कमज़ोर कर दिया है।

चुनांचे तहरीकुल कुरान के सिलसिले में भी बल्दा के अक्सरो बेश्तर अमाइद[43] ने इसका ज़िक्र फ़रमाया।

मुझे यह देख कर इन्तहाई मुसर्रत हुई कि मोहतरमी वाला जनाब नवाब निज़ामत जंग बहादुर अर्से से इस अम्र के ख़्वाहिशमन्द हैं कि मुसलमान सतही चीज़ों के बजाए किसी ठोस और मज़बूत अम्ल को इख़्तियार करें, मौसूफ़[44] ने अमीक़ ग़ौरो फ़िक्र के बाद तय कर लिया कि मुसलमानों को कुरान करीम के इरशादात की तरफ़ इक़दाम की दावत दी जाए और आपके रफ़ीक़ सिद्दीक़ी-अल-मुकर्रम जनाब नवाब बहादुर यार जंग बहादुर ने भी अपनी बुलन्द हिम्मत और मुसलसल जिद्दो-जहद को

इसी तरफ़ मुनअतिफ़[45] कर दिया है। नवाब निज़ामत जंग बहादुर बावजूद पीरानासाली[46] के कुरान करीम की मुस्तहकम ख़िदमत की तरफ़ मुतवज्जह हैं अर्से से आपकी ख़्वाहिश थी कि कुरान करीम के अवामिरो-नवाही[47] लाइहया अम्ल की शक्ल में जमा कर दिए जाएँ। मौसूफ़ ने जामेअ़ उस्मानिया सुल्तान बाज़ार के जल्से के मौक़े पर अपनी मुहब्बत और ख़ास अन्दाज़े बयान से मुझे मजबूर कर दिया कि मैं उनकी इस देरीना ख़्वाहिश[48] को पूरा करूँ।

अगरचे मुझे मुसलमानाने बल्दा की मुहब्बत और मजालिसे नब्विया की कसरत और अलालते तबा की वजह से फ़ुर्सत न थी मगर **"अल्हम्दो लिल्लाहिल मुक़्तदिर"** यह मुख़्तसिर रिसाला "दावते अमल" बल्दा ही में मुरत्तब[49] हो गया। तहरीकुल कुरान की अहम ज़रूरत की बिना पर पहला नम्बर बल्दा ही में तबअ़[50] हो गया। दूसरा हिस्सा इन्शा अल्लाह बदायूं से शाए होगा।

हत्तुल इमकान मैंने इसकी सई [51] की है कि कुरान करीम के बाज़ ख़ास ख़ास मज़ामीन[52] जिनका मुस्लिम की ज़िन्दगी और अम्ल से ताल्लुक़ है इस रिसाले में आ जायें।

उनवानात[53] के तहत मुतअद्दिद[54] आयात ही ले ली गई हैं वर्ना कुरान करीम जैसा बहरे-ज़ख़्ख़ार[55] और उसके तमाम मज़ामीनो आयात का कुल्लियतन[56] यकजा[57] करना आसान काम नहीं है। इसी लिए सिर्फ़ आयात और उनके तर्जुमे[58] पर इक्तिफ़ा[59] की गई वर्ना हर आयत पर मुस्तक़िल-क़रीब[60] में इसके शानदार नताइज[61] बरआमद हो जायेंगे और मुसलमानों को बैरूनी मुआवनत[62] की एहतियाज[63] न रहेगी।

अगर मेरे इशग़ाल[64] ने मौक़ा दिया तो इन्शा-अल्लाह इसी नहज[65] पर दूसरा रिसाला अहादीस-नब्विया का पेश करूंगा।

वस्सलाम

फ़क़ीर मुहम्मद अब्दुल हामिद क़ादरी

मुअर्रिख़ा 20 रबी-उस-सानी 1352 हि0

शब्द-कोष (एहवाल वाक़ई)

☆ एहवाल वाक़ई

मुद्दत-मदीदा[1] - काफ़ी अर्से से
उस्तवार[2] - दृढ़
तदाबीर[3] - योजनायें
इदारा[4] - संस्था
सदहा-मजालिस[5] - अत्यधिक सभायें
लाहया-ए-अम्ल[6] - तौर तरीक़ा
तजवीज़कर्दा[7] - प्रस्तुत करना
मुआलिजात[8] - उपचार
तजवीज़[9] - प्रस्तुति
सहीफ़ा-ए-क़ुदरत[10] - कुरान मजीद
सरमाया-ए-हयात[11] - जीवन सन्देश
मन्ज़िले-मक़सूद[12] - लक्ष्य
मनाज़िल[13] -
मुबाहिसो-मतालिब[14]- वक्तव्य एवं अर्थ
मुअल्लिम[15] - धर्म गुरू
हयात-तैय्यबा[16] - पवित्र जीवन
क़वानीन[17] - नियम
तग़य्युरात[18] - बदलाव
सुहफ़े-इलाहिया[19] - ख़ुदा की किताब
आरा-ओ-इनकार[20] - राए एवं नकारना
बातिल-परस्तों[21] - झूठे लोगों
महफ़ूज़ो-मामून[22] - सुरक्षित
सयानत[23] - रक्षा
मुस्तहकम[24] - दृढ़
आलमगीर-तालीमात[25] - विश्वव्यापी शिक्षा
मुताला[26] - अध्ययन
हिदायात[27] - निर्देश
आलम[28] - विश्व
इस्लाहो-ज़रूरत[29] - आवश्यकतानुसार
इजमाली[30] - संक्षिप्त
महदूदो-मुतय्यन[31]-
सक़ीम[32] - बिगड़ी हुई

जज़्बातो-हिस्सियात[33] - प्रेम भाव
बहरो-बर[34] - जल-थल
मुसख़्ख़र[35] - क़ाबू में
वाहिमा[36] - सन्देह
क़िला-क़ुमा[37] - तहस नहस
मानेअ[38] - रुकावट
निज़ामे-अम्ल[39] - कार्य क्रम
इश्तिग़ाल[40] - मसरूफ़ियत, व्यस्तता
क़ाइदीन[41] - पथ प्रदर्शक
सबब[42] - कारण
अमाइद[43] - उल्मा
मौसूफ़[44] - श्रीमान
मुनअतिफ़[45] - ध्यान केन्द्रित करना
पीरानासाली[46] - बुढ़ापा
अवामिरो-नवाही[47]- अच्छाई का आदेश एवं बुराई को रोकना.
देरीना ख़्वाहिश[48] - दृढ़ इच्छा
मुरत्तब[49] - संकलित
तबअ[50] - छपना
सई[51] - कोशिश
मज़ामीन[52] - विषय
उनवानात[53] - शीर्षक
मुतअद्दिद[54] - गिने चुने
बहरे-ज़ख़्ख़ार[55] - समुद्रों सी गहराई
कुल्लियतन[56] - पूर्ण रूप से
यकजा[57] - जमा करना
तर्जुमे[58] - अर्थ
इक्तिफ़ा[59] - भरोसा
मुस्तक़्बिल-क़रीब[60]- निकट भविष्य में
नताइज[61] - परिणाम
बैरूनी मुआवनत[62] - बाहरी मदद
एहतियाज[63] - आवश्यकता
इशग़ाल[64] - व्यस्ता, मसरूफ़ियत
नहज[65] - तरीक़ा

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

هُوَالۡمُقۡتَدِرُ

कुरान करीम ख़ुदा की किताब है:

☆ ذٰلِکَ الۡکِتٰبُ لَارَیۡبَ فِیۡهِ (1)

यह वह किताब है जिसमें कुछ सन्देह नहीं।

☆ وَاِنَّهٗ لَتَنۡزِیۡلُ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ. (2)

बेशक कुरान परवर्दिगार आलम का उतारा हुआ है।

कुरान करीम का मिस्ल (तरह) मुमकिन नहीं:

☆ وَاِنۡ کُنۡتُمۡ فِیۡ رَیۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰی عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ وَادۡعُوۡا شُهَدَآءَکُمۡ مِّنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اِنۡ کُنۡتُمۡ صٰدِقِیۡنَ فَاِنۡ لَّمۡ تَفۡعَلُوۡا وَلَنۡ تَفۡعَلُوۡا (3)

अगर तुम हमारी (अपने बन्दे पर) इस उतारी हुई किताब के बारे में शक कर रहे हो तो इस जैसी एक ही सूरत ले आओ और अल्लाह के सिवा अपने हिमायतियों को भी बुला लो अगर तुम सच्चे हो, फिर अगर तुम ऐसा न कर सके और हरगिज़ न कर सकोगे।

☆ قُلۡ لَّئِنِ اجۡتَمَعَتِ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلٰۤی اَنۡ یَّاۡتُوۡا بِمِثۡلِ هٰذَا الۡقُرۡاٰنِ لَا یَاۡتُوۡنَ بِمِثۡلِهٖ وَلَوۡ کَانَ بَعۡضُهُمۡ لِبَعۡضٍ ظَهِیۡرًا. (4)

(ऐ रसूल) कह दीजिए अगर जिन्न और इन्सान इस बात पर जमा हो जाएं कि कुरान का मिस्ल (तरह कोई किताब) ले आएँ तो इसका मिस्ल नहीं ला सकेंगे अगर चे उन में हर एक

---

1. अल-बक़रा : 2
2. अश-शोरा:192
3. अल-बक़रा : 23
4. बनी इस्राईल:88

दूसरे का मददगार हो। (यानी अगर सब जिन्न और इन्सान मिल कर इसकी तरह कोई किताब लाने की कोशिश करें तो हरगिज़ इसकी तरह कोई किताब नहीं ला सकते क्योंकि यह किसी बन्दे की किताब नहीं है बल्कि बन्दों को पैदा करने वाले की किताब है।)

☆ وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَ بِالْحَقِّ نَزَلَ. (5)

हक़्क़ानियत (सच्चाई) के साथ हमने कुरान उतारा और हक़्क़ानियत के साथ उतरा।

कुरान करीम का विभिन्न समय में प्रकट होना:

☆ وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا. (6)

कुरान को हम ने मुतफ़र्रिक़ तौर (थोड़ा-थोड़ा) पर इस लिए उतारा कि तुम इसको ठहर ठहर का पढ़ो और हम ने इसको रफ़्ता-रफ़्ता उतारा। (यानी कुरान तौरात और इन्जील की तरह एक दम पूरा नहीं उतारा गया बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़ थोड़ा थोड़ा उतारा गया।)

कुरान करीम में कजी (असमानता) नहीं:

☆ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا قَيِّمًا. (7)

तमाम तारीफ़ें खुदा के लिए हैं जिस ने अपने बन्दे पर किताब उतारी और उसमें ज़रा भी कजी (टेढ़, कमी) न रखी और इसको मुस्तक़ीम (बिल्कुल सही) बनाया।

कुरान पाक आसान (सरल) कर दिया गया:

☆ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ. (8)

हमने कुरान को नसीहत के लिए आसान कर दिया, क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

---

5. अल-इसरा : 106
6. अल-इसरा : 6
7. अल-कहफ़ : 1
8. अल-क़मर : 17

कुराने करीम तमाम जहान (संसार) के लिए हिदायत (मार्ग दर्शक) है:

☆ تبٰرَکَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی عَبْدِہٖ لِیَکُوْنَ لِلْعَالَمِیْنَ نَذِیْرًا. (9)

वह ज़ात बड़ी बरकत वाली है जिस ने अपने बन्दे पर कुरान नाज़िल फ़रमाया ताकि वह तमाम जहां के लिए (अल्लाह के अज़ाब से) डराने वाला हो।

☆ یٰاَیُّھَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَیْکَ مِنْ رَّبِّکَ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسٰلَتَہٗ. (10)

ऐ रसूल जो कुछ तुम पर नाज़िल किया गया उसको पहुंचा दो, अगर तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह का पैग़ाम न पहुंचाया।

कुरानी जामिइयत (फैलाव):

☆ کُلٌّ فِیْ کِتٰبٍ مُّبِیْنٍ. (11)

सब कुछ रौशन किताब में मौजूद है।

☆ وَلَقَدْ جِئْنٰھُمْ بِکِتٰبٍ فَصَّلْنٰہُ عَلٰی عِلْمٍ ھُدًی وَّرَحْمَۃً لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ. (12)

हमने उनको पहुंचा दी किताब जिस में मुफ़स्सल (विस्तार से) बयान किया है वह हिदायत व रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं।

कुरान मजीद में खुली हुई निशानियाँ:

☆ وَکَذٰلِکَ اَنْزَلْنٰہُ اٰیٰتٍ بَیِّنٰتٍ. (13)

इस तरह कुरान हम ने खुली हुई निशानियों के साथ उतारा।

---

9. अल-फ़ुरक़ान : 9
10. अल-माइदा : 67
11. अल-हूद : 6
12. अल-एराफ़ : 52
13. अल-हज्ज : 16

कुरान करीम आलमे इन्सानियत (मानवता) के लिए नसीहत व शिफ़ा है:

☆ يَاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَ تْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَ شِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ. (14)

ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत, दिलों की बीमारी की शिफ़ा और ईमान वालों के लिए हिदायत व रहमत आ गई।

कुरान करीम में ग़ौर (ध्यान) करो:

☆ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ. (15)

हमने कुरान करीम अरबी में उतारा ताकि तुम लोग समझ सको।

कुरान करीम के ज़रिये आलमे इन्सानियत को गुमराही (अन्धकार) से निकालना:

☆ كِتَابٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ. (16)

ये (कुरान हकीम) ऐसी किताब है जिसको हमने तुम्हारे ऊपर नाज़िल किया ताकि तुम लोगों को अन्धेरों से रौशनी की तरफ़ निकालो।

कुरान करीम के ज़रिये फ़ैसला:

☆ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ. (17)

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हमने तुम पर किताब बरहक़ (इस लिए) उतारी है कि तुम लोगों के फ़ैसले इसके ज़रिये करो।

---

14. यूनुस : 57
15. यूसुफ़ : 2
16. इब्राहीम : 1
17. अन-निसा : 105

कुरान करीम की इताअ्त (आज्ञा पालन) करो:

☆ وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ. (18)

ये मुबारक किताब हमने नाज़िल फ़रमाई तो तुम इसकी इत्तबा करो (आज्ञा का पालन) और परहेज़गारी इख़्तियार करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

कुरान करीम से मुंह मोड़ने वालों का हाल:

☆ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا. (19)

उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जिसको रब की आयतों से नसीहत की गई तो उसने उनसे मुंह फेर लिया।

कुरान करीम की तिलावत और उसके आदाब:

☆ وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ. (20)

जब कुरान पढ़ा जाए तो उसको कान लगा कर सुनो और ख़ामोश रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

कुरान पाक से मुहब्बत करने वालों का हाल:

☆ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ. (21)

जब उन पर ख़ुदा की आयतें पढ़ी जाती हैं तो वह आयतें उनके ईमान को बढ़ा देती हैं और वह अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (यानी कुराने करीम की तिलावत से ईमान वालों के ईमान में ताज़गी आती है और उनका भरोसा अल्लाह तआला पर बढ़ जाता है।)

---

18. अल-इनाम : 155
19. अल-कहफ़ : 57
20. अल-एराफ़ : 204
21. अल-अनफ़ाल : 2

☆ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ. (22)

जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके कुलूब (हृदय) डर जाते हैं। (नेक लोगों के सामने जब अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल अल्लाह के अज़ाब से डर जाते हैं और अल्लाह का ख़ौफ़ बढ़ जाता है जो ईमान की अलामत है।)

☆ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَ قُلُوْبُهُمْ. (23)

इसके सुनने से रोंगटे खड़े हो जाते हैं उन लोगों की खालों पर, जो अपने खुदा से डरते हैं, फिर उनकी खालें और उनके दिल यादे खुदा की जानिब (ओर) नर्म हो जाते हैं।

☆☆☆

---

22. अल-हज्ज : 35

23. अल-ज़ुम्र : 23

कुरान करीम और अमल

अवामिर (अच्छे कार्यों का आदेश)

क्या जन्नत में बग़ैर मशक़्क़त (परेशानी) चले जाओगे:

☆ اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَاْتِكُمْ مَثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسَّتْهُمُ الْبَاْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ. (24)

क्या तुम ये ख़याल करते हो कि जन्नत में चले जाओगे हालांकि तुमको पेश नहीं आई उन जैसी हालत जो तुम से पहले गुज़रे हुए लोगों पर सख़्तियां और तकलीफ़ें पहुंचीं। (यानी जन्नत में पहुँचना आसान नहीं है बल्कि उसके लिए बहुत मुसीबतें बर्दाश्त करना पड़ेंगी जैसा कि अल्लाह वालों ने बर्दाश्त की हैं।)

अमल करने वाले मक़सूद तक पहुंचेंगे:

☆ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ. (25)

जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक अमल किये उनको ख़ुदा उनके ईमान की वजह से मक़सूद तक पहुंचा देगा, बहती होंगी नहरें आसाइश के बाग़ों में।

राई के बराबर भी अमल बेकार न होगा:

☆ وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ. (26)

अगर राई के दाने के बराबर भी अमल होगा तो हम उसको लायेंगे और हम हिसाब पूरा लेने वाले हैं

---

24. अल-बक़रा: 214
25. यूनुस: 9
26. अल-अंबिया: 47

☆ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ. (27)

ख़ुदा ने ईमान वालों से वादा फ़रमाया है कि तुम में जो भी ईमान लाए और नेक अमल करे उसको मुल्क में ख़लीफ़ा (नाइबे रसूल) बनाएगा जिस तरह अगलों को ख़लीफ़ा बनाया था।

अमल से जन्नत मिलेगी:

☆ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا. (28)

जो शख़्स भी नेक काम करे ख़्वाह वह मर्द हो या औरत बशर्ते कि ईमान रखता हो वही जन्नत में जायेंगे और उन पर तिल बराबर भी ज़ुल्म न होगा।

ख़ुदा को न भुलाओ:

☆ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ. (29)

उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उनको ऐसी बला में डाला कि वह अपने आप ही को भूल गए, यही लोग फ़ासिक़ (गुनाहगार) हैं।

अमल मग़फ़िरत का ज़रिया है:

☆ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ. (30)

जो ख़ुदा पर ईमान लाता है और नेक अमल करता है ख़ुदा उस

27. अल-नूर: 55
28. अन-निसा: 124
29. अल-हश्र: 19
30. अत्तग़ाबुन: 9

से उसकी बुराइयां दूर कर देगा और ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिसके नीचे नहरें बहती हैं, वह हमेशा वहीं रहेंगे यही बड़ी कामयाबी है।

☆ وَعَدَاللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ. (31)

खुदा ने वादा किया है जो ईमान लाए और नेक अमल किए उनके वास्ते मग़फ़िरत और अज्र अज़ीम (बड़ा सवाब) है।

नेकी (श्रेष्ठ कार्य) का बदला:

☆ مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا. (32)

जो शख़्स नेकी ले कर आया उसके लिए इस से बेहतर अज्र (बदला) होगा।

अमल से गुनाह (पाप) दूर होंगे:

☆ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوْا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ. (33)

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए हम ज़रूर उन से उनके गुनाह दूर कर देंगे और यक़ीनन उनको उनके आमाल (कार्यों) का इस से बेहतर बदला देंगे।

अमल करने वालों को बशारते कुबरा (बड़ी ख़ुशख़बरी):

☆ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِى الْاٰخِرَةِ. (34)

जो लोग ईमान लाए और तक़्वा (परहेज़गारी) इख़्तियार किया उनके लिए खुशख़बरी है दुनिया की ज़िन्दगी और आख़िरत में।

---

31. अल-माइदा: 9
32. अल-क़सस: 84
33. अल-अनकबूत: 7
34. यूनुस: 64

अमल करने वाला ख़ौफ़ज़दा न होगा:

☆ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ. (35)

जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने नेक अमल किए तो उस पर कोई ख़ौफ़ नहीं है और वह ग़मज़दा नहीं होगा।

अमल करने वालों के लिए ख़ुशहाली:

☆ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰب. (36)

जो ईमान लाए हैं और जिन्होंने नेक अमल किए उन्ही के लिए खुशहाली है और अच्छा ठिकाना है।

आमाल (श्रेष्ठ कार्य) में ख़ुलूस (शुद्धता) की ताकीद (आदेश):

☆ قُلْ اِنِّىْ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ. (37)

कह दीजिए कि मुझे हुक्म दिया गया कि मैं अल्लाह की इख़लास (शुद्धता) के साथ इबादत करूं और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं सब से पहला मुसलमान हूं।

☆ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهُ دِيْنِىْ. (38)

कह दो मैं खुदा ही की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपनी इबादत को ख़ालिस बना कर।

---

35. अल-माइदा: 69

36. अर-राद: 29

37. अल-ज़ुम्र: 12

38. अल-ज़ुम्र: 14

☆ قُلْ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَ مَحْیَایَ وَ مَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ. (39)

कह दो मेरी नमाज़ और इबादतें, मरना, जीना सब अल्लाह के लिए है।

मुख़्लिसीन (श्रेष्ठ व उत्तम कार्य करने वालों) का अमल ज़ाए (व्यर्थ) नहीं होगा:

☆ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُضِیْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِیْنَ. (40)

खुदा मुख़लिसीन (शुद्धता के साथ इबादत करने वाले) का अज्र (इनाम) ज़ाए नहीं करता।

असल नेकी क्या है?:

☆ لَیْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْھَکُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰکِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَالْیَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِکَةِ وَالْکِتٰبِ وَالنَّبِیّٖنَ. (41)

नेकी (आज्ञा पालन) यह नहीं है कि तुम अपना मुंह मशरिक़ व मग़रिब की तरफ़ कर लो बल्कि नेकी उस शख़्स की है जो अल्लाह, यौमे आख़िरत, फ़रिश्तों, किताबों और नबियों पर ईमान लाया। (यानी सिर्फ़ नेकी इसी चीज़ का नाम नहीं कि हमने अपने मुंह को काबे या बैतुलमक़दिस की ओर कर लिया बल्कि असल नेकी यह है कि हम पुख़्ता अक़ीदा रखें कि मरने के बाद दोबारा ज़िन्दा हो कर हमें अपने आमाल (समस्त जीवन में किए गए कार्य) का हिसाब देना है)

ख़ुदा के नज़दीक (निकट) ज़ी रुतबा (उच्च वर्गीय) कौन है:

☆ اِنَّ اَکْرَمَکُمْ عِنْدَ اللّٰہِ اَتْقٰکُمْ. (42)

---

39. अल-इनाम: 162
40. तौबा: 120
41. अल-बक़रा: 177
42. अल-हुजरात: 13

तुम में ख़ुदा के नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त वाला वही है जो ज़्यादा परहेज़गार (ख़ुदा से डरने वाला) हो।

ख़ुदा की याद:

☆ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا. (43)

ऐ ईमान वालों! ख़ुदा का ज़िक्र (याद) कसरत (अधिकता) से किया करो और सुबहो शाम उसकी तसबीह किया करो।

☆ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ. (44)

अपने रब का नाम लेते रहो।

☆ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ. (45)

ख़ुदा का ज़िक्र (याद) सब से बड़ा है।

☆ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا وَمِنْ اٰنَائِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ. (46)

अपने रब की तसबीह करते रहो सूरज निकलने और डूबने से पहले और रात व दिन की घड़ियों और दिन के किनारों में।

ख़ुदा के ज़िक्र से चैन हासिल होगा:

☆ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ. (47)

जो ईमान लाए उनके कुलूब (हृदय) ख़ुदा के ज़िक्र से आराम पाते हैं। ख़बरदार हो जाओ ख़ुदा के ज़िक्र से दिलों को चैन हासिल होता है।

---

43. अल-एहज़ाब: 42
44. अल-मुज़म्मिल: 8
45. अल-अनकबूत: 45
46. ताहा: 130
47. अल-राद: 28

ख़ुदा के ज़िक्र से बेतवज्जही (ध्यान न लगाना) मईशत (रोज़गार) की तंगी का बाइस (कारण) है:

☆ وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ اَعْمٰى. (48)

जिसने मेरी याद से मुंह मोड़ा उसकी मईशत तंग कर दी जाएगी और हम क़यामत में उसको अन्धा उठाएंगे।

☆ وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ. (49)

जो शख़्स ख़ुदा की याद से आंख चुराता है हम उस पर शैतान मुसल्लत कर देते हैं जो उसका दोस्त होता है।

पहलू में किसी शख़्स (व्यक्ति) के दो दिल नहीं होते:

☆ مَاجَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِىْ جَوْفِهٖ. (50)

नहीं पैदा किए अल्लाह ने किसी शख़्स के लिए दो दिल उसके पहलू के अन्दर।

आख़िर मुसलमान ख़ुदा की तरफ़ कब झुकेंगे:

☆ اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ. (51)

क्या मुसलमानों के लिए वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल झुक जाएं ख़ुदा की याद और क़ुरान के सामने जो ख़ुदा की जानिब से नाज़िल हुआ। वह उन जैसे न हो जाएं जिनको हमने

---

48. ताहा: 124
49. अल-ज़ुख़रुफ़: 36
50. अल-एहज़ाब: 4
51. अल-हदीद: 16

किताब दी और लम्बा ज़माना गुज़र जाने से उनके दिल सख़्त हो गए और उनमें बहुत से गुनाहगार हैं।

नमाज़:

☆ حَافِظُوْا عَلَى الصَّلٰوةِ (52)

तमाम नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो। (यानी नमाज़ों को उसके वक़्तों में पढ़ो)

☆ وَأْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا. (53)

अपने एहलो अयाल (परिवार) को नमाज़ का हुक्म दो और खुद भी उस पर क़ायम (स्थिर) रहो।

नमाज़ बेहयाई (अश्लीलता) से रोकती है:

☆ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ. (54)

बेशक नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है।

☆ قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِىْ صَلٰوتِهِمْ خٰشِعُوْنَ. (55)

फ़लाह (मुक्ति) पाई उन ईमान वालों ने जो अपनी नमाज़ में खुशू (ध्यानमग्न) करते हैं।

रोज़ा:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ. (56)

ऐ ईमान वालो! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए ताकि तुम परहेज़गार (हर काम में अल्लाह से डरने वाले) हो जाओ।

---

52. अल-बक़रा: 238
53. ताहा: 132
54. अल-अनकबूत: 45
55. अल-मोमिनून: 2
56. अल-बक़रा: 183

☆ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ. (57)

अगर रोज़ा रखोगे तो तुम्हारे लिए ही बेहतर होगा बशर्ते कि तुम समझो।

☆ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ. (58)

जो शख़्स तुम में से रमज़ान का महीना पाए तो ज़रूर रोज़ा रखे और जो बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों की गिनती पूरी करे। (यानी बीमार और मुसाफ़िर को रोज़ा न रखने की इजाज़त है लेकिन जब बीमारी दूर हो जाए और सफ़र ख़त्म हो जाए तो इन छूटे हुए रोज़ों का रखना ज़रूरी है।)

हज:

☆ وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ. (59)

अल्लाह के लिए हज व उमरा करो (यानी अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए)

☆ اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمٰتٌ فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ. (60)

हज के चन्द महीने हैं जिसने लाज़िम कर लिया उन में हज को उसके लिए न तो औरत से कुरबत जाइज़ है न ग़लत और बेहयाई की बातें, न हज के दौरान लड़ाई झगड़ा करना, जो कुछ नेकी करोगे खुदा उसको जानता है।

☆ فَاِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا. (61)

---

57. अल-बक़रा: 184
58. अल-बक़रा: 185
59. अल-बक़रा: 196
60. अल-बक़रा: 197
61. अल-बक़रा: 200

जब हज के अरकान पूरे कर चुको तो ख़ुदा का ज़िक्र करो जिस तरह अपने बाप दादा का ज़िक्र करते थे बल्कि उस से भी बढ़ कर।

ज़कात:

☆ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ. (62)

जो लोग ईमान लाए और नेक अमल किए नमाज़ अदा की ज़कात दी उन्हीं के लिए ख़ुदा के यहां अज्र (इनाम) है। न उनको कुछ डर है न वह ग़मगीन होंगे।

मौत से क़ब्ल (पहले) ख़र्च कर डालो:

☆ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ. (63)

जो कुछ हमने तुम को दिया है उस में से ख़ुदा की राह में ख़र्च करो, इस से पहले कि तुम को मौत आ जाए।

☆ وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ. (64)

नेक बन्दों के माल में सवाल करने वालों और मेहरूम लोगों का हिस्सा है। (यानी जिनको अल्लाह ने माल दिया है तो सारा माल उनका ही नहीं है बल्कि उस माल में ग़रीबों, ज़रूरतमन्दो का हिस्सा है जिसे निकालना ज़रूरी है।)

सरमायादारों (धनवानों) को ज़जरो - तौबीख़ (चेतावनी):

☆ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ. (65)

---

62. अल-बक़रा: 277
63. अल-तग़ाबुन: 10
64. अज़्-ज़ारियात: 19
65. तौबा: 34

जिन लोगों ने सोना चान्दी जमा कर लिया और उसको ख़ुदा की राह में ख़र्च नहीं करते (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़बर दे दो। (यानी जो लोग अपने माल की ज़कात नहीं निकालते उनको आख़िरत में तरह तरह के अज़ाब दिए जायेंगे।)

ख़ुदा की राह में बेहतर चीज़ ख़र्च करो:

☆ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ. (66)

ऐ ईमान वालो! जो कुछ तुमने कमाया हो उस में से सुथरी चीज़ें (ख़ुदा की राह में) ख़र्च करो।

ख़र्च करने वालों का दर्जा:

☆ اَلَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ اُولٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ. (67)

जो लोग नमाज़ अदा करते और ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं उन ही के लिए ख़ुदा के पास दर्जात (मर्तबे) हैं और मग़फ़िरत व इज़्ज़त की रोज़ी है।

शोहरत के लिए ख़र्च न करो:

☆ يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰى كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا. لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا. (68)

ऐ ईमान वालो! अपने सदक़ात को एहसान जता कर और ईज़ा (दुख) दे कर अकारत (बर्बाद) न करो उस शख़्स की तरह मत हो जो लोगों के दिखावे को अपना माल ख़र्च करता है और

---

66. अल-बक़रा: 267

67. अल-अनफ़ाल: 4

68. अल-बक़रा: 264

ख़ुदा व आख़िरत पर ईमान नहीं लाता, उसकी ख़ैरात की मिसाल उस चट्टान की तरह है जिस पर मिट्टी पड़ी हो और उस पर ज़ोर का पानी बरसा जिस ने सपाट कर के छोड़ दिया जो कुछ कमाया था कुछ भी हाथ न लगा। (यानी जो लोग सदक़ा करने के बाद एहसान जताते हैं या दिल दुखा कर सदक़ा देते हैं तो वह लोग उस चट्टान की तरह हैं जिस पर कुछ मिट्टी हो और ज़ोर की बारिश ने उस मिट्टी को बिल्कुल साफ़ कर दिया हो इसी तरह यह लोग हैं कि इनको सदक़ा, ज़कात देने के बाद जो सवाब मिला उसे इनके एहसान और तकलीफ़ ने बिल्कुल बर्बाद कर दिया गोया कि इन्होंने सद्क़ा किया ही नहीं और इन को अज़ाब अलग मिला।)

किसी को कुछ दे कर एहसान न जताओ:

☆ اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَا اَذًى لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ. (69)

वह लोग जो ख़ुदा की राह में ख़र्च करते हैं और दे कर एहसान नहीं जताते और न किसी को बताते हैं, उन्हीं के लिए ख़ुदा के यहां अज्र है न उनको डर होगा और न वह रंजीदा होंगे।

☆☆☆

69. अल-बक़रा: 262

मुस्लिम की ज़िन्दगी का दीनी व दुनियवी प्रोग्राम

हक़ बात कहो:

जब बात कहो तो हक़ (सच) कहो। (70) ☆ وَاِذا قُلتُمْ فَاعْدِلُوا.

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰى اَلَّاتَعْدِلُوْا اِعْدِلُوْا هُوَاَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى. (71)

ऐ ईमान वालो! खुदा के वास्ते इन्साफ़ की गवाही देने के लिए खड़े हो जाया करो ऐसा न हो कि लोगों की अदावत से तुम इन्साफ़ न करो, ज़रूर इन्साफ़ करो कि यह परहेज़गारी के क़रीबतर है।

अहद पूरा करो:

☆ وَاَوْفُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ اِذَا عَاهَدْتُّمْ. (72)

अल्लाह का अहद (वादा) जब करो तो पूरा करो।

नेक काम का हुक्म करो:

☆ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِيْنَ. (73)

नेक काम का हुक्म करो, जाहिलों से कनाराकश (अलग) हो जाओ।

नेक काम में मदद करो:

☆ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ. (74)

---

70. अल-इनाम: 153
71. अलमाइदा: 8
72. अल-नहल: 91
73. अल-ऐराफ़: 199
74. अल-माइदा: 2

नेकी व परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद करो, गुनाह व सरकशी में मदद न करो।

मां-बाप के साथ हुस्ने सुलूक (उत्तम व्यवहार):

☆ وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا اِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَا اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا. وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ. (75)

मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो अगर वह दोनों या उन में से एक भी बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनको उफ़ भी न कहो और न झिड़को, उन से अदब की बात कह और उनके सामने झुका दे शफ़क़्क़त से आजिज़ी का बाज़ू।

क़राबतदारों (रिश्तेदारों) के हुक़ूक़ अदा करो:

☆ وَبِذِالْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِى الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ. (76)

एहसान करो रिश्तेदारों, पड़ोसियों और हमनशीन, रफ़ीक़ों और मुसाफ़िरों, गुलामों के साथ।

औरतों के साथ हुस्ने सुलूक (उत्तम व्यवहार) और बाज़ अहम इरशादात:

☆ وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِىْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ. (77)

औरतों का भी हक़ मर्दों पर पर उसी तरह है जैसा कि मर्दों का औरतों पर दस्तूर के मुताबिक़।

☆ وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ. (78)

इन औरतों को सताने के लिए न रोको और न इन पर ज़्यादती

---

75. अल-इसरा: 24
76. अन-निसा: 36
77. अल-बक़रा: 228
78. अल-बक़रा: 231

करने लगो जिसने ऐसा किया उसने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया। (यानी उस ने खुद अपनी जान पर ज़ुल्म किया।)

☆ وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ. (79)

उन्हें ख़र्चा दो, मक़दूर (मालदार) पर उसकी हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उसकी हैसियत के मुताबिक़ ये ख़र्चा मुनासिब तरीके पर होना चाहिये ये नेकूकरों पर फ़र्ज़ है।

☆ وَلَا تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ. (80)

आपस में एहसान करना न भूलो।

☆ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا. (81)

औरतों के साथ अच्छाई के साथ रहो अगर वह तुमको ना पसन्द भी हों तो क्या अजब है कि तुमको एक चीज़ ना पसन्द हो और खुदा उसमें बहुत सी खूबियां पैदा कर दे।

☆ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ. (82)

औरतें तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो। (जिस तरह लिबास ऐबों को छुपाता है इसी तरह मर्दों को औरतों के ऐब और बुराइयाँ छुपाना चाहिये और औरतों को मर्दों के ऐब छुपाना चाहिए।)

मर्द व औरत का दर्जा:

☆ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ. (83)

---

79. अल-बक़रा: 236
80. अल-बक़रा: 237
81. अन-निसा: 19
82. अल-बक़रा: 187
83. अल-बक़रा: 228

मर्दों को औरत पर फ़ौक़ियत है और अल्लाह ज़बर्दस्त हिकमत वाला है।

☆ اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ. (84)

मर्द औरतों पर मुहाफ़िज़ व निगराँ हैं।

एक से ज़्यादा शादी करने की सूरत में बीवियों के दरम्यान इन्साफ़ और समानता रखना:

☆ فَانْكِحُوْا مَاطَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَ ثُلٰثَ وَ رُبٰعَ فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً. (85)

जो औरतें पसन्द आएं उन से अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ निकाह कर लो, दो दो और तीन तीन और चार चार हां अगर तुम को अन्देशा हो कि अद्ल (इन्साफ़) न कर सकोगे तो एक ही पर इक्तिफ़ा करो। (यानी मर्दों को एक वक़्त में चार शादी करने की इजाज़त है इस शर्त के साथ कि उनमें इन्साफ़ करे किसी की हक़ तल्फ़ी न हो सबके बराबर हुक़ूक़ अदा करे।)

☆ وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَ حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهَا. (86)

अगर तुम को मियाँ बीवी की मुख़ाल्फ़त का अन्देशा हो तो मुक़र्रर कर दो एक मुन्सिफ़ मर्द के कुनबे से और एक मुन्सिफ़ औरत के ख़ानदान से।

निकाह बेवा (विधवा):

☆ وَاَنْكِحُوا الْاَيَامٰى مِنْكُمْ. (87)

अपनी क़ौम की बेवा औरतों का निकाह कर दिया करो।

---

84. अन-निसा: 34
85. अन-निसा: 3
86. अन-निसा: 255
87. अन-नूर: 32

औरत की पाक दामनी और कुरान हकीम:

☆ وَقُل لِّلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُيُوبِهِنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ. (88)

मुसलमान औरतों से कह दो कि अपनी नज़रें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें और अपना सिंगार ज़ाहिर न करें मगर जो खुला रहता है और उनको चाहिए कि अपने गिरेबानों पर अपनी ओढ़नियाँ डाल लें और ज़ाहिर न करें अपना सिंगार।

औरत और अमल सालिह (श्रेष्ठ कार्य):

☆ وَمَن يَقْنُتْ مِنكُنَّ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيمًا. (89)

तुम में से जो भी अल्लाह और उसके रसूल की इताअत (आज्ञा पालन) करेगी और नेक अमल करेगी तो हम उसको दो मर्तबा अज्र अता करेंगे और हम ने उसके लिए इज़्ज़त की रोज़ी मुहैय्या कर रखी है।

औरतों को माकूल बात करने का हुक्म:

☆ وَقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوفًا. (90) माकूल (उचित) बात कहा करो।

घरों में रहने का हुक्म और बेपर्दगी की मुमानियत (मनाही):

☆ وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ. (91)

---

88. अन-नूर: 31
89. अल-अहज़ाब: 31
90. अल-अहज़ाब: 32
91. अल-अहज़ाब: 33

अपने घरों में रहा करो, ज़माना-ए-जाहिलियत की तरह सिंगार दिखाती हुई न फिरो।

औरतों को अमली ताकीद:

☆ وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَ اَطِعْنَ اللّٰهَ رَسُوْلَه. (92)

नमाज़ पढ़ो, ज़कात अदा करो ख़ुदा और रसूल की इताअत (आज्ञा का पालन) करो।

ख़ुदा का ज़िक्र करने वाली औरतों से अज्रे-अज़ीम का वादा:

☆ اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّائِمِيْنَ وَالصّٰئِمٰتِ وَالحَافِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّ الذّٰكِرٰتِ اَعَدَّاللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا. (93)

बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरतें और फ़रमांबरदार मर्द और फ़र्मांबरदार औरतें और सच्चे मर्द और सच्ची औरतें और साबिर मर्द और साबिर औरतें और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें और ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औरतें और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाली औरतें और बकसरत अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औरतें, अल्लाह ने इनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अज्र (इनाम) तैयार कर रखा है।

---

92. अल-अहज़ाब: 33

93. अल-अहज़ाब: 35

तौबा करो ताकि फ़लाह (कामयाबी) हासिल हो:

☆ وَتُوبُوٓا إِلَى اللّٰهِ جَمِيعًا اَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ. (94)

ऐ मुसलमानों! तुम सब मिल कर खुदा की बारगाह में तौबा करो ताकि फ़लाह (कामयाबी) पाओ।

भलाई करने से कामयाबी होगी:

☆ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ. (95)

भलाई करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

दरगुज़र (माफ़ करने) की तालीम:

☆ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ. (96)

मुआफ़ कर दो और दरगुज़र कर दो खुदा एहसान करने वालों को दोस्त रखता है।

तक़्वे (परहेज़गारी) के साथ सीधी बात कहो:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا. (97)

ऐ ईमान वालो! खुदा से डरो और सीधी सच्ची बात कहा करो।

तक़्वे ही से तुम्हारा इम्तियाज़ (नुमायां शान)है:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ. (98)

ऐ ईमान वालो! अगर खुदा से डरते रहो तो वह तुम्हारा एक इम्तियाज़ पैदा कर देगा और तुम से गुनाह दूर कर देगा और तुम्हें बख़्श देगा और वह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

---

94. अल-नूर: 31
95. अल-हज: 77
96. अल-माइदा: 13
97. अल-अहज़ाब: 70
98. अल-अनफ़ाल: 29

ख़ुदा बाख़बर है तक़्वा चाहता है:

☆ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ. (99)

ख़ुदा से डरते रहो तुम जो कुछ भी करते हो उस से ख़ुदा बा ख़बर है।

अमानतें हवाले कर दिया करो:

☆ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰى اَهْلِهَا. (100)

ख़ुदा तुमको हुक्म करता है कि अमानतदारों की अमानतें दे दिया करो।

अख़ुव्वत (भाईचारा):

☆ وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَاءً فَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖ اِخْوَانًا. (101)

दीन की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और मुतफ़र्रिक़ (अलग अलग) न हो याद करो अल्लाह का एहसान जो तुम पर है जबकि तुम एक दूसरे के दुश्मन थे तो उस ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त (मुहब्बत) पैदा कर दी तो तुम भाई भाई हो गए।

☆ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ. (102) मुसलमान भाई-भाई हैं।

आपस की फूट का नतीजा:

☆ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ. (103)

आपस में झगड़ा न करो क्योंकि (इस तरह) हिम्मत पस्त हो जाएगी और तुम्हारी हवा ख़ेज़ी होगी।

---

99. अल-हश्र: 18
100. अन-निसा: 58
101. आले-इमरान: 103
102. अल-हुजरात: 10
103. अल-अनफ़ाल: 46

सुलह:

☆ فَاصْلِحُوا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ. (104)

अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दिया करो और ख़ुदा से डरते रहो।

☆ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ. (105)

आपस में सुलह करो।

बाहमी शूरा (एकता समिति):

☆ وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ. (106)

उन से कामों में मश्विरा लिया करो।

तिजारत (व्यापार) व अक्ले हलाल:

☆ فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلاً طَيِّبًا. (107)

ख़ुदा ने तुम्हें जो रोज़ी दी है उस में से हलाल और पाक (तरीक़े) से खाओ।

तोल में कमी न करो:

☆ وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ اِنِّىْ اَرٰكُمْ بِخَيْرٍ وَّ اِنِّىْ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ. (108)

नाप-तोल में कमी न किया करो मैं देखता हूँ तुमको आसूदा और तुम पर यौमे मुहीत (क़यामत का दिन) के अज़ाब का अन्देशा करता हूँ।

☆ وَيٰقَوْمِ اَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ. (109)

ऐ क़ौम! नाप-तोल पूरी पूरी इन्साफ़ से किया करो, लोगों को उनकी चीज़ें कम न दिया करो।

---

104. अल-हुजरात: 10
105. अल-अनफ़ाल: 1
106. अल-इमरान: 159
107. अल-नहल: 114
108. हूद: 84
109. हूद: 85

तिजारत (व्यापार) का कामयाब उसूल तंगदस्ती में क़र्ज़दार को मोहलत:

☆ وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ اِلٰى مَيْسَرَةٍ وَاَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌلَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ. (110)

अगर कोई तंगदस्त हो तो मोहलत दी जाए उसकी फ़राख़ी तक अगर क़र्ज़ का रुपया मुआफ़ कर दो तो तुम्हारे हक़ में बेहतर होगा, अगर तुम समझो।

क़र्ज़ (उधार) की तहरीर (लेख):

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌۢ بِالْعَدْلِ وَلَا يَاْبَ كَاتِبٌ اَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللّٰهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِىْ عَلَيْهِ الْحَقُّ. (111)

ऐ ईमान वालो! जब तुम क़र्ज़ लिया करो एक मुक़र्ररा मियाद (तयशुदा वक़्त) तक तो उसको लिख लिया करो या कोई लिखने वाला इन्साफ़ से तुम्हारे दरम्यान लिख दिया करे और न इन्कार करे लिखने वाला इस बात से कि लिख दे जिस तरह अल्लाह ने उसको सिखा दिया तो उसको चाहिए कि लिख दे और लिखवाए वह शख़्स जिस पर हक़ है।

माल की मुहब्बत ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल न कर दे:

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ. (112)

ऐ ईमान वालो! तुम को तुम्हारे माल ग़ाफ़िल न बना दें।

---

110. अल-बक़रा: 280

111. अल-बक़रा: 282

112. अल-मुनाफ़िक़ून: 9

आख़िरत की तिजारत:

☆ اِنَّ الَّذِیْنَ یَتْلُوْنَ کِتٰبَ اللّٰہِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوۃَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰھُمْ سِرًّا وَّعَلَانِیَۃً یَّرْجُوْنَ تِجَارَۃً لَّنْ تَبُوْرَ. (113)

वह लोग जो ख़ुदा की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ अदा करते हैं और ख़र्च करते हैं, जो हमने उनको दिया (ख़ुदा की राह में) ख़ुफ़िया व एलानिया (छुपाकर व ज़ाहिर कर के) वह उम्मीदवार हैं ऐसी तिजारत के जो कभी हलाक न होगी।

☆ رِجَالٌ لَّا تُلْھِیْھِمْ تِجَارَۃٌ وَّلَا بَیْعٌ عَنْ ذِکْرِ اللّٰہِ. (114)

यह वह लोग हैं जिन्हें तिजारत व ख़रीदो फ़रोख़्त अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल नहीं करतीं।

हुकूमत व सियासत (प्रशासन व राजनीति):

☆ اَنَّ الْاَرْضَ یَرِثُھَا عِبَادِیَ الصّٰلِحُوْنَ. (115)

ज़मीन के वारिस मेरे नेक बन्दे होंगे।

कमज़ोरों को हुकूमत की ताक़त अता करना:

☆ وَنُرِیْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَی الَّذِیْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِی الْاَرْضِ وَنَجْعَلَھُمْ اَئِمَّۃً وَّنَجْعَلَھُمُ الْوٰرِثِیْنَ وَ نُمَکِّنَ لَھُمْ فِی الْاَرْضِ. (116)

हम उन लोगों पर एहसान करने का क़सद (इरादा) करते हैं जो ज़मीन पर कमज़ोरो लाचार समझे गए और हम उनको पेशवा और वारिस बनाएंगे और ज़मीन में उनको क़ुदरत व ताक़त अता फ़रमायेंगे।

---

113. अल-फ़ातिर: 29

114. अल-नूर: 37

115. अल-अंबिया: 105

116. अल-क़सस: 6

इस्लाम में तलवार का मक़सद फ़ितना ख़त्म करना है:

☆ وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ. (117)

उनसे मुक़ातला करो ताकि फ़ितना न रहे और अल्लाह के दीन का तरीक़ा क़ायम हो जाए।

अपनी तरफ़ से ज़्यादती न करो:

☆ وَقَاتِلُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ. (118)

जो तुम से ख़ुदा की राह में लड़ें तुम उनसे लड़ो अपनी तरफ़ से ज़्यादती न करना ख़ुदा ज़्यादती करने वालों को ना पसन्द करता है।

जो तुम से न लड़ें उनके साथ इन्साफ़ करो:

☆ لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْا اِلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ. (119)

अल्लाह तुमको उन लोगों के साथ नेकी और इन्साफ़ करने से मना नहीं करता जो तुम से दीन के मुआमले में न लड़ें और तुम को तुम्हारे घरों से न निकालें (तुम उनके साथ एहसान करो और उनके हक़ में इन्साफ़ करो) ख़ुदा इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है।

अगर दुश्मन सुलह (सन्धि) करना चाहें तो सुलह कर लो:

☆ وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ. (120)

---

117. अल-बक़रा: 193
118. अल-बक़रा: 193
119. अल-मुमतहिना: 8
120. अल-अनफ़ाल: 61

अगर वह सुलह की तरफ़ झुकें तो तुम भी सुलह की जानिब झुक जाओ और ख़ुदा पर भरोसा करो।

मुसलमानों को बहादुरी की तालीम (शिक्षा):

☆ يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ. (121)

ऐ मुसलमानों! जब तुम किसी क़ौम से मुक़ाबला करो तो साबित क़दम रहो ख़ुदा का ज़िक्र ज़्यादा करते रहो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ।

☆ وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا. (122)

और सब्र में दुश्मनों से आगे रहो और इस्लामी सरहद की निगेहबानी (हिफ़ाज़त) करो।

जब मुक़ाबले की ठान लो तो ख़ुदा पर भरोसा करो:

☆ فَاِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ. (123)

जब तुम मुक़ाबले की ठान लो तो ख़ुदा पर भरोसा करो बेशक ख़ुदा दोस्त रखता है तवक्कुल (भरोसा) करने वालों को।

☆ وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ. (124)

हिम्मत न हारो और न रंज करो अगर तुम (पक्के) मुसलमान हो तो तुम ही ग़ालिब रहोगे।

मुक़ाबले में पीठ न दो:

☆ يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ. (125)

---

121. अल-अनफ़ाल: 45

122. अल-इमरान: 200

123. अल-इमरान: 159

124. अल-इमरान: 139

125. अल-अनफ़ाल: 15

ऐ ईमान वालो! जब तुम्हारा कुफ़्फ़ार से मुक़ाबला हो तो उनको पीठ न दिखाना।

अक़लियत (अल्पसंख्यक) व अकसरियत:

☆ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا. (126)

अगर तुम में बीस शख़्स साबित क़दम रहने वालों हों वह ग़ालिब (भारी) होंगे दो सौ पर अगर तुम में से सौ हों तो वह हज़ार काफ़िरों पर ग़ालिब रहेंगे।

मुक़ाबले में ख़ुदा का सहारा लो:

☆ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ. (127)

ख़ुदा का सहारा मज़बूत पकड़े रहो वही तुम्हारा अच्छा कारसाज़ (काम बनाने वाला) व मददगार है।

इस्तक़ामत (जमे रहना) और ख़ुदा की इमदाद:

☆ اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ. (128)

जिन्होंने ने यह कहा कि हमारा रब अल्लाह है और जमे रहे तो उन पर उतरते हैं फ़रिश्ते और (कहते हैं) न ख़ौफ़ करो और न डरो जन्नत की खुशख़बरी हासिल करो।

क़ौमों की तरक़्क़ी (उन्नति) का राज़:

☆ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ. (129)

अल्लाह तआला क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक वह अपनी हालत खुद न बदलें।

---

126. अल-इनफ़ाल: 65
127. अल-हज: 78
128. हामीम सजदा: 23
129. अल-राद: 11

कुरान करीम और दूसरी इबादतगाहों की इज़्ज़त व हिफ़ाज़त:

☆ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّ صَلَوٰتٌ وَّ مَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ (130)

अगर न हटाया करता अल्लाह लोगों को एक दूसरे के हाथ से तो ज़रूर गिरा दिए जाते राहिबों के ख़ल्वत ख़ाने और नसारा के गिरजा और यहूद के माअ्बद और मुसलमानों की मस्जिदें जिन में अल्लाह का नाम लिया जाता है।

साहिबे हुक्म की इताअ्त (आज्ञा पालन):

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ (131)

ऐ ईमान वालो! खुदा और उसके रसूल की इताअत करो और उनकी जो तुम में साहिबे हुकूमत हों। (यानी अपने ख़लीफ़ा के हुक्म को मानो।)

हाकिमों को हिदायाते कुरानी:

☆ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ. (132)

जब तुम हाकिम बनो लोगों में तो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला करो, खुदा तुमको अच्छी बात की नसीहत करता है।

तुम में से एक जमाअ्त हक़ की तरफ़ बुलाने वाली होनी चाहिए:

☆ وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ. (133)

---

130. अल-हज: 40
131. अन-निसा: 59
132. अन-निसा: 58
133. अल-इमरान: 104

तुम में एक गिरोह ऐसा होना चाहिए कि जो बुलाता रहे नेक काम की जानिब, अच्छे कामों का हुक्म करे और बुरी बातों से मना करे।

दावते हक़ का अच्छा तरीक़ा:

☆ اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ. (134)

ख़ुदा के रास्ते की तरफ़ हिकमत और नेक नसीहत के साथ बुलाओ और बेहतर तरीक़े से बहस करो।

☆ وَلَا تُجَادِلُوْا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ. (135)

न झगड़ा करो एहले किताब से मगर इस तरह कि वह निहायत उम्दा हो।

☆ وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ. (136)

मुसलमानो! बुरा न कहो उनको जिन्हें ये काफ़िर अल्लाह को छोड़ कर पुकारते हैं। (यानी दूसरे मज़हब वालों के अपने बनाए ख़ुदाओं को ऐ मुसलमानों तुम बुरा मत कहो।)

अल्लाह की जानिब बुलाने वालों की हालत:

☆ اَلَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَ يَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰه. (137)

जो ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाते हैं वह उसी से डरते हैं और सिवाए ख़ुदा के किसी से नहीं डरते।

☆ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓءُ. (138)

अल्लाह से जानने वाले बन्दे ही डरते हैं।

---

134. अल-नहल: 125
135. अल-अनकबूत: 46
136. अल-इनाम: 108
137. अल-अहज़ाब: 39
138. अल-फ़ातिर: 28

☆ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوْآ إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ. (139)

क्यों न निकलें उनकी जमाअ़्त में से चन्द लोग जो दीन में समझ पैदा करें और डराएं अपनी क़ौम को जब वह लौट आएं उनकी जानिब ताकि वह बचते रहें।

दीन की दावत देने वालों का दूसरा रुख़:

☆ أَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ. (140)

तुम लोगों को नेक काम का हुक्म करते हो और अपने नफ़्स को भुला दिया हालांकि तुम किताब पढ़ते हो क्या तुम समझते नहीं।

☆ لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَالَا تَفْعَلُوْنَ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ أَنْ تَقُوْلُوْا مَالَا تَفْعَلُوْنَ. (141)

ऐसी बात क्यों कहते हो जो ख़ुद नहीं करते, ख़ुदा को वह बात हद दर्जा नापसन्द है कि कह कर अमल न करो।

☆ وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (142)

सच्चाई में झूठ को न मिलाओ और न हक़ बात को छुपाओ, जान बूझ कर।

जब बात कहो तो हक़ कहो अगर्चे रिश्तेदार के ख़िलाफ़ ही क्यों न हो:

☆ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى. (143)

जब बात कहो तो हक़ कहो अगर चे रिश्तेदार क्यों न हो।

☆☆☆

---

139. तौबा: 122
140. अल-बक़रा: 44
141. अस-सफ़: 3
142. अल-बक़रा: 42
143. अल-इनाम: 152

नवाही (बुरे कार्यों की मनाही)

शैतान की इक़्तिदा (पैरवी) न करोः

☆ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ. (144)

ऐ ईमान वालो! शैतान के नक़्शे क़दम पर न चलो वह तो बे हयाई और बुरे ही कामों का हुक्म करेगा।

फ़्वाहिश से बचोः

☆ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ. (145)

न पास फटको बेहयाई के कामों के जो ज़ाहिरो पोशीदा हों।

ज़िना (अवैध सम्बंध) की मुमानिअ़त (मनाही):

☆ وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّسَآءَ سَبِيْلًا. (146)

ज़िना के क़रीब न जाओ बेशक वह बेहयाई और बुरी राह है।

शराब और जुए की मुमानिअ़तः

☆ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ. (147)

ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ, बुत और जुए के तीर शैतानी काम हैं उन से बचते रहो ताकि तुम फ़लाह (कामयाबी) पाओ।

☆ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِى الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ. (148)

---

144. अल-नूरः 21
145. अल-इनामः 151
146. अल-इसराः 32
147. अल-माइदाः 90
148. अल-माइदाः 91

शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए की वजह से तुम्हारे आपस में दुश्मनी और बुग़ज़ (नफ़रत) डलवा दे और तुम को खुदा की याद से रोक दे, तो क्या अब भी बाज़ न आओगे। (तो क्या अब भी शराब और जुआ नहीं छोड़ोगे।)

सूद की मुमानिअ्त:

☆ وَمَآاٰتَيۡتُمۡ مِّنۡ رِّبًا لِّيَرۡبُوَا عِنۡدَاللّٰهِ. (149)

यह जो तुम सूद देते हो लोगों को माल में वह नहीं बढ़ता, अल्ला के नज़्दीक।

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تَاۡكُلُوا الرِّبٰوٓا اَضۡعَافًا مُّضٰعَفَةً وَّاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ. (150)

ऐ ईमान वालो! दोगुना, चौगुना सूद (ब्याज) न खाओ अल्लाह से डरो ताकि फ़लाह पाओ।

सूदख़ूरो का हाल:

☆ اَلَّذِيۡنَ يَاۡكُلُوۡنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوۡمُوۡنَ اِلَّا كَمَا يَقُوۡمُ الَّذِىۡ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيۡطٰنُ مِنَ الۡمَسِّ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ قَالُوۡٓا اِنَّمَا الۡبَيۡعُ مِثۡلُ الرِّبٰوا وَاَحَلَّ اللّٰهُ الۡبَيۡعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا. (151)

जो लोग सूद खाते हैं न खड़े हो सकेंगे (क़यामत में) मगर जिस तरह वह शख़्स खड़ा होता है जिसको शैतान ने अपनी झपट से हवास खो दिए हों, यह इस वजह से है कि उन्होंने कहा था कि सौदागरी भी तो सूद ही है, हालांकि खुदा ने तिजारत को जाइज़ रखा और सूद को हराम कर दिया।

---

149. अल-रूम: 39

150. अल-इमरान: 130

151. अल-बक़रा: 275

अल्लाह से जंग की धमकी:

☆ فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ. (152)

अगर ऐसा न करोगे तो ख़बरदार हो जाओ अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिए।

ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई करने) की मुमानिअ़त:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّأْكُلَ لَحْمَ اَخِيْهِ. (153)

ऐ मुसलमानो! ज़्यादा गुमान करने से बचो बेशक बाज़ बदगुमानी गुनाह है और किसी का भेद न टटोला करो और तुम में कोई किसी की ग़ीबत न करे, क्या तुम में से कोई यह पसन्द करेगा कि अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए।

ख़यानत (अधिकारों का हनन) न करो:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْا اَمٰنٰتِكُمْ. (154)

ऐ ईमान वालो! खुदा और रसूल की ख़यानत न करो और न आपस की अमानत में।

बुख़्ल (कंजूसी) न करो:

☆ وَلَا تَجْعَلْ يدک مغلولة. (155) अपना हाथ बांध कर न रखो।

इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) भी अच्छा नहीं:

☆ اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْآ اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ. (156)

फ़ुज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं।

---

152. अल-बक़रा: 279
153. अल-हुजरात: 12
154. अल-अनफ़ाल: 27
155. अल-इसरा: 29
156. अल-इसरा: 27

☆ وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ (157)

इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) न करो ख़ुदा इसराफ़ करने वालों को दोस्त नहीं रखता।

अपना माल आपस में नाहक़ न खाओ:

☆ وَلَا تَاْكُلُوْا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ. (158)

अपना माल आपस में नाहक़ न खाओ।

यतीमों का माल न खाओ:

☆ وَاٰتُوا الْيَتٰمٰى اَمْوَالَهُمْ. (159)

यतीमों (जिसका बाप मर गया हो) को उनके माल दे दो।

☆ اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِىْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا. (160)

जो लोग यतीमों का माल ज़ुल्मन (अत्याचार करके) खाते हैं तो वह अपने पेटों में आग खाते हैं।

मुसलमानों का क़त्ल:

☆ وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا. (161)

मुसलमानों को लाइक़ नहीं कि मुसलमान का क़त्ल करे।

☆☆☆

---

157. अल-ऐराफ़: 31
158. अल-बक़रा: 188
159. अन-निसा: 27
160. अन-निसा: 92
161. अन-निसा: 92

मईशत (नैतिकता) की तालीम (शिक्षा)

घर में बिला इजाज़त न जाओ:

☆ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَاْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰى اَهْلِهَا. (162)

ऐ ईमान वालो! दूसरों के घरों में न जाया करो ता वक़्त कि इजाज़त न ले लो और सलाम न कर लो घर वालों पर।

ख़ुदा के दुश्मन को दोस्त न बनाओ:

☆ لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ. (163)

ऐ ईमान वालो! मुसलमानों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त न बनाओ।

दूसरों के रास्ते पर न चलो:

☆ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ. (164)

दूसरों के रस्तों पर न चलो इस लिए कि वह तुमको जुदा कर देंगे उसकी राह से, यह है जिसका तुमको हुक्म दिया गया है ताकि तुम तक़्वा (परहेज़गारी) इख़्तियार करो।

☆ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِىْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ. (165)

अगर तुम उनकी ख़्वाहिशों पर चले उसके बाद कि आ चुका तुम्हारे पास इल्म तो तुम्हारा कोई नहीं अल्लाह के यहां हिमायत व मदद करने वाला।

---

162. अल-नूर: 27
163. अन-निसा: 144
164. अल-इनाम: 153
165. अल-बक़रा: 120

☆ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ. (166)

कुफ़्फ़ारो-मुनाफ़िक़ीन का कहना न मानो।

ग़ैरों की तक़लीद (आज्ञा पालन) का नतीजा:

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ. (167)

ऐ ईमान वालो! अगर तुम काफ़िरों का कहना मानोगे तो वह तुम को उल्टे पांव लौटा कर ले जायेंगे फिर तुम नुक़सान में आ जाओगे।

जिन्होंने ख़ुद अपने मज़हब को खेल बना लिया उन से कनाराकश (दूर) रहो:

☆ وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا. (168)

उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और जिनको दुनिया की ज़िन्दगी ने धोखे में डाल दिया है।

जो इस्लाम का मज़ाक़ उड़ायें उनके साथ मुसलमानों के ताअल्लुक़ात (सम्बन्ध):

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا. (169)

ऐ ईमान वालो! जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी खेल बना लिया है उनको अपना दोस्त न बनाओ।

दुश्मनों को अपना राज़दार न बनाओ:

☆ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا. (170)

---

166. अल-बक़रा:
167. अल-इमरान: 149
168. अल-इनाम: 70
169. अल-माइदा: 57
170. अल-इमरान: 118

ऐ ईमान वालो! अपने ग़ैर को राज़दार न बनाओ क्योंकि वह तुम्हारी ख़राबी में कमी नहीं करेगा।

गुनाह में किसी की मदद न करो:

☆ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ. (171)

गुनाह और ज़्यादती में एक दूसरे की मदद न करो।

क़सम खाने वालों का एतबार (विश्वास) न करो:

☆ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِينٍ هَمَّازٍ مَّشَّاءٍ بِنَمِيمٍ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ. (172)

ऐसे शख़्स का कहना न मानो जो ज़्यादा क़सम खाने वाला हो वह ज़लील है, ताना देने वाला है, चुग़लियाँ खाता और नेक काम से रोकने वाला है।

---

171. अल-माइदा: 2

172. अल-क़लम: 12

दीनो दुनिया की कारआमद (लाभदायक) दुआऐं

☆ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّفِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ. (173)

ऐ हमारे रब! हम को दुनिया व आख़िरत में भलाई अता फ़रमा औ दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले।

☆ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِیْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَیْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَآ اَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِیْنَ. (174)

ऐ हमारे रब! हम को न पकड़ अगर हम भूल जाएं या चूक जाएं, ऐ हमारे रब! हम पर भारी बोझ न रख जैसा कि तूने हम से पहलों पर रखा हम से इतना भारी बोझ न उठवा जिसकी हम में सकत (ताक़त) न हो दरगुज़र (माफ़) फ़रमा दे हमें बख़्शा दे और हम पर रहम फ़रमा तू हमारा हामी है तू हमारी मदद कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में।

☆ رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ هَدَیْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ. (175)

ऐ हमारे रब! हमारे कुलूब में कजी (टेढ़) न पैदा फ़रमा। इसके बाद कि तू हिदायत फ़रमा चुका और अता फ़रमा हमें अपनी सरकार से मेहरबानी बिला शुबा तू बड़ा देने वाला है।

---

173. अल-बक़रा: 201

174. अल-बक़रा: 286

175. अल-इमरान: 8

☆ رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَاوَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَاتُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَاد. (176)

ऐ हमारे रब! हम को अता फ़मा जो तूने अपने रसूलों के ज़रिये वादा फ़रमाया हम को क़यामत के दिन ज़लील न कर बेशक तू वादा ख़िलाफ़ी नहीं फ़रमाता।

☆ رَبَّنَاظَلَمْنَآ اَنْفُسَنَا وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْ حَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ. (177)

ऐ हमारे रब! हम ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया अगर तू हमें बख़्शे या हम पर रहम न फ़रमाए तो हम यक़ीनन नामुराद हो जायेंगे।

☆ رَبَّنَااغْفِرْلِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَاب. (178)

ऐ हमारे रब! मुझको और मेरे माँ-बाप को बख़्श दे और सब ईमान वालों को जिस दिन क़ायम हो हिसाब।

☆ رَبِّ اشْرَحْ لِىْ صَدْرِىْ وَيَسِّرْلِىْ اَمْرِىْ وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِىْ. (179)

ऐ मेरे रब! मेरा सीना खोल दे और मेरा काम मेरे लिए आसान कर दे और मेरी ज़बान से गिरह खोल दे।

☆☆☆

---

176. अल-इमरान: 194

177. अल-ऐराफ़: 231

178. इब्राहीम: 41

179. ताहा. 27